विचार बिन्दु

सब इंद्रियों को वश में रखकर सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़-अचल और अचिन्त्य, सर्वव्यापी, स्वर्णीय, अविनाशी स्वरुप की उपासना करते हैं, वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं।

–भगवान कृष्ण

नौकरी, चाकरी और जोकरी (मसखरी) में विकृति वृद्धि पर

देश में बेरोज़गारी की समस्या सदा से रही है, कभी-कभी इसका हो-हल्ला ज्यादा मचता है और कभी कम। लेखक की राय में स्वतंत्रता के बाद यह समस्या बढ़ी है। बचपन में लेखक का समय गाँव में ही बीता है और वह भी स्वतंत्रता के पूर्व। गाँव में ऐसा बहुत कम सुनने में आता था कि युवा बेरोज़गार हैं। हाँ, निश्चित ही शिक्षा का प्रचार-प्रसार कम था। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक स्तर के व्यक्ति को भी शिक्षक या क्लर्क की नौकरी सरलता से मिल जाती थी। यूँ मानिये कि सामान्यत: बिना स्कूली शिक्षा के पढ़े-लिखे, शिक्षित लोगों को नौकरी मिल जाती थी। गाँव में भूखों मरते किसी को नहीं देखा। निष्कर्ष यह है कि देश में स्वतंत्रता के बाद हमारी शिक्षा नीति और आर्थिक नीति ज़िम्मेदार थी। बड़े-बड़े उद्योग धंधों को प्रारंभ करने के साथ गाँवों की आत्मनिर्भरता पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। चीन का उदाहरण है कि उसने गाँवों में कोई न कोई ऐसा छोटा-मोटा उद्योग प्रारंभ किया कि उन्होंने उसी उद्योग में महारत प्राप्त कर और उत्पाद बढ़ा कर चीनी वस्तुओं से सारे विश्व को चनी उत्पाद से भर दिया। इसके विपरीत भारत में ऐसा कोई प्रयास नहीं हुआ।

महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा में गाँवों को आत्म निर्भर बनाने की भावना थी, परंतु उसे सतही तौर पर लागू किया गया और उसकी भावना को न समझ कर धीरे-धीरे बंद कर दिया। मानव जीवन की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति गाँव में हो जाती थी। मात्र कुछ वस्तुओं, उच्च शिक्षा तथा चिकित्सा के लिये नगर की ओर भागना पड़ता था। लेखक उदयपुर ज़िले के ऊंटाला (वल्लभनगर) गाँव में रहता था, 50 किलोमीटर पर उदयपुर शहर था। पहले ऊंटाला से मावली जंक्शन तक पैदल, बैलगाड़ी, घोड़ा, ऊंट, तांगा आदि से जाते और वहाँ से उदयपुर की ट्रेन थी। बाद में ऊंटाला का नाम वल्लभनगर हो गया और मावली तक भी ट्रेन संपर्क हो गया। लेखक की ससुराल भी ठेट चम्बल के बीहड़ के गाँव रैपुरा में थी, 1-1/2 किलोमीटर पर जैतपुर कस्बा था, उससे 8-10 किलोमीटर पर बाह तहसील और 50 किलोमीटर पर आगरा ज़िला मुख्यालय है। इस प्रकार इन सुदूर अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों में भी कभी कोई असुविधा नहीं हुई। शहरीकरण की अंधी दौड़ में गाँव उजड़ व बरबाद हो गये। आत्मनिर्भर भारत का सपना बड़ी-बड़ी चीज़ों के अलावा गाँवों में वास्तव में साकार हो रहा था।

गाँवों में किसान थे और वे आबादी के 80 प्रतिशत थे एवं आत्मनिर्भर थे। लुहार, सुथार, कुम्हार, स्वर्णकार, किराना, कपड़े के व्यापारी, नाई, बारी, धोबी, सफाईकर्मी, मज़दूर, किसान सभी एक-दूसरे पर निर्भर थे और घोर भाईचारा था। चूड़ीगर, जुलाहे व अन्य दुकानदार मुस्लिम समुदाय से भी होते। सभी प्रेम से रहते। शादी-ब्याह, सुख-दुख में एक-दूसरे की मदद करते। शिक्षा ऐसी होती थी जो इसी ग्राम की आत्मनिर्भरता में उपयोग हो जाती। परंतु 75 वर्षों में शिक्षा ने श्रम की निष्ठा खोई, श्रम साध्य कार्यों से दूर किया। लोग कृषि व मज़दूरी को हेय समझने लगे। केवल सफेद कॉलर व्यवसाय और नौकरी की चाह बढ़ने लगी, इसी चाह में शहर की ओर भागना प्रारंभ हुआ। विज्ञान और तकनीक की सही शिक्षा से ही गाँव समृद्ध, संपन्न व आत्मनिर्भर हो सकते थे, उसके बजाय बेरोज़गारी और शहरीकरण बढ़ता गया। आवश्यकता है ऐसी शिक्षा नीति की जो कृषि व श्रम के प्रति रुझान बढ़ाये। तभी प्रधानमंत्री का आत्मनिर्भर भारत का सपना पुन: साकार होगा।

आजकल अभिनय और राजनीति दोनों क्षेत्रों में जोकरों-मसखरों का प्राधान्य होता जा रहा है। राजनीति में माहिर राजनेता स्व.राजनारायण ने गांधी के विरुद्ध चुनाव लड़कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे केन्द्रीय मंत्री भी रहे। ऐसे राजनेता तो हमें स्वीकार हैं, परंतु ऐसे शीर्ष राजनेता जो अनावश्यक व असमय अपने विरोधियों के गले मिलें या आँख बिचकायें एवं समय-असमय कुछ भी कहें, देश व समाज में हास्यास्पद ही बनते हैं। नुकसान ही करते हैं–अपना भी, समाज का भी और राजनीति का भी।

हमारे पिछड़ेपन में नौकरी की चाह के साथ चाकरी का चस्का भी जुड़ा हुआ है। हमने नौकरी में अतिरिक्त आय तथा लाभ कमाने के लिये ही चाकरी शब्द गढ़ा है। नौकर तो कुछ लोगों को करना ही होगा, परंतु चाकरी में चापलूसी, दासता, बंधुआपन आदि की भावना आ जाती है। बावजी चतरसिंह जी कहते हैं, 'धन खेती, धुक चाकरी, धन-धन है व्यापार।' आशय यह कि खेती में धन है या वह धन्य है, क्योंकि कृषक अन्नदाता है चाकरी में व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है, जबकि कृषि और व्यापार में वह स्वतंत्र है। कृषि और व्यापार में अपनी इच्छानुसार कार्य करने की बहुत छूट है, जबकि 'चाकरी' तो 'मालिक' की इच्छानुसार करनी होगी। नौकरी के साथ चाकरी का अर्थ वर्तमान संदर्भ में निष्ठा व ईमानदारी तथा निष्पक्षता के बजाय अंध राजनीतिक प्रतिबद्धता से हो गया है। इस अंध राजनीतिक प्रतिबद्धता में उचित-अनुचित, सही-गलत का विवेक नहीं रहता। मात्र वह कार्य जो सत्ता का समर्थन, सत्ता के स्थायित्व और स्वार्थ सिद्धि में सहायक हो वही अभीष्ट हो जाता है। इसमें राजनेताओं और नौकरशाही में एक दुरभि संधि हो जाती है और यह दुरभि संधि नाना रूपों से भ्रष्टाचार को जन्म देती है। नौकरशाही के तंत्र के एक पुर्जे के रूप में नौकर सत्ता की सही रीति-नीति का क्रियान्वयन करे यह तो उचित है। परंतु चाकरी में अंध राजनीतिक प्रतिबद्धता में राजनेता व नौकर मिलकर जनता का शोषण करने लगते हैं। हमें ऐसा तंत्र विकसित करना है जो नौकरी करे परंतु चाकरी नहीं।

नौकरी-चाकरी की ललक के साथ एक नई जमात इस देश में मसखरों की बढ़ रही है। नौकर-चाकर तो भ्रष्टाचार फैला रहे हैं तो ये मसखरे इस देश के सम्मान को घोर क्षति पहुंचा रहे हैं। मसखरे हर काल में रहे हैं। नाटक में इसे विदूषक कहते हैं। जब वातावरण काफी उदास, दुखांत तथा गंभीर हो जाता है तो मसखरे बनाम विदूषक का प्रवेश होता है। अंग्रेज़ी में इसे 'जोकर' कह सकते हैं। सर्कस में भी 'जोकर' हुआ करता है। जोकर का कार्य बड़ा कठिन होता है। सामान्यतया वह सबसे निपुण अभिनेता या पात्र होता है। आजकल अभिनय और राजनीति दोनों क्षेत्रों में जोकरों-मसखरों का प्राधान्य होता जा रहा है। राजनीति में माहिर राजनेता स्व.राजनारायण ने श्रीमती गांधी के विरुद्ध चुनाव लड़कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे केन्द्रीय मंत्री भी रहे। ऐसे राजनेता तो हमें स्वीकार हैं, परंतु ऐसे शीर्ष राजनेता जो अनावश्यक व असमय अपने विरोधियों के गले मिलें या आँख बिचकायें एवं समय-असमय कुछ भी कहें, देश व समाज में हास्यास्पद ही बनते हैं। नुकसान ही करते हैं–अपना भी, समाज का भी और राजनीति का भी।

फिल्म जगत में राजकपूर एक ऐसे सफल अभिनेता थे जिन्हानें गंभीर अभिनेता के साथ एक सफल हास्य अभिनेता के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने एक फिल्म 'जोकर' भी बनाई थी जो काफी प्रसिद्ध हुई। वे स्वयं पर हास्य करके दूसरों को हंसाते पर कभी दूसरों की भावना को आहत नहीं करते। जॉनी वॉकर भी प्रसिद्ध हास्य अभिनेता रहे हैं। परंतु आजकल हास्य अभिनेताओं की एक नई जमात का उदय हुआ है जो देश और समाज का अपमान कर प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे ही एक अभिनेता हैं 'वीरदास'। ये वीर हैं नाम से, काम से नहीं। ये विकृत मानसिकता और दासता के शिकार हैं। ऐसे लोग विदेशों में लोकप्रियता हेतु कहते हैं कि भारत ऐसा देश है जहाँ पुरुष दिन में महिलाओं का आदर दर्शाते हैं और रात्रि में उन पर बलात्कार करते हैं। आराम यह कि भारत बलात्कारियों और चरित्रहीनों का देश है। क्या विदेश में जाकर अपने देश की बुराई करना उचित है? यही नहीं कुछ वरिष्ठ राजनेताओं ने भी उनके सुर में सुर मिलाया। एक वे हैं जो देश के शिक्षा मंत्री रहे और दूसरे वे जो पाश्चात्य रंग में रंगे हुए हैं। हालांकि एक बुद्धिमान राजनेता ने इससे असहमति प्रकट की। हमें इस कुत्सित जोकरी की भर्त्सना कर निरुत्साहित करना चाहिये।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

जीवन के तीन रंग: आपको कौन-सा रंग पसंद है?

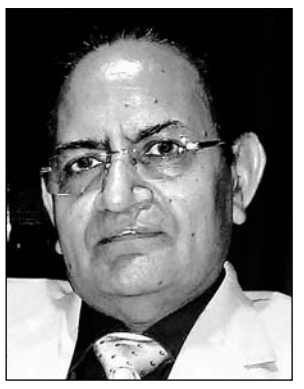

अभी कुछ समय पहले की बात है कि सुबह सुबह मेरी क्लिनिक पर एक युवक आया, बेहद घबराया हुआ। कुर्सी पर बैठते ही बोला– 'जल्दी कीजिए, मेरा बीपी देखिए, मेरे हृदय की जांच कीजिए।' मैंने जांच के बाद में उसे पूछा कि– 'वह इतना घबराया हुआ क्यों है?' उसने बताया कि– कल रात को वह जयपुर के एक चिकित्सा विशेषज्ञ को दिखाने गया था। रात के कोई 11:00 बजे के आस-पास उसका नंबर आया। जब वह डॉक्टर साहब के कमरे में प्रविष्ट हुआ तो वे उसको देखकर ही बड़ी बेचारगी से बोले– अरे भाई, तुम लोग मुझे इतना क्यों सताते हो? मैं थक के चूर हो गया हूं। मैंने अपनी जिंदगी का एक भी दिन अपने लिए नहीं जिया है। मैं काम करते-करते अधमरा हो गया हूं। तुम लोग क्यों आते हो इतनी रात को इलाज करवाने? रोगी चकित हो गया, खैर, जैसे-तैसे उनको दिखाया। सुबह जब अखबार खोला तो पाया कि रात में उन डॉक्टर साहब को हृदयाघात हो गया था और वे दिवंगत हो गए। उस युवक ने सोचा कि देखो यह व्यक्ति इतना बड़ा डॉक्टर होकर एक भी दिन अपने लिए नहीं जी पाया, तो क्या मैं जी पाऊंगा? यही उसकी घबराहट का एकमात्र कारण था ।

अब दूसरी तरफ देखें तो मेरे एक मित्र एक ऐसे युवक को बहुत नज़दीक से जानते हैं जो कि जब भी मर्जी आती, अपनी साइकिल उठाता और जयपुर से दिल्ली तक चला जाता। अजमेर चला जाता, कहीं भी चला जाता। फिर उसके मन में आया कि साइकिल से ही विश्व भ्रमण किया जाए तो थोड़े बहुत पैसे इकट्ठे करके वह दुनिया घूमने निकल पड़ा। आज कई साल हो गए वह पूरी दुनिया घूम रहा है। जहां भी जाता है गांव के लोगों के पास रुक जाता है, कहीं दो दिन रुकता है,कहीं चार दिन। गांव के लोग उसको खाना खिलाते हैं, उसकी साइकिल की मरम्मत करते हैं और वह आगे बढ़ जाता है। वह अपने जीवन से बहुत संतुष्ट है। कहता है कि मेरा धरती पर आना सफल हुआ। अब उसके पास धन-दौलत तो नहीं है पर अनुभव है, उमंग है, जज्बा है और वह अपनी मस्ती में अपनी जिंदगी संतुष्टि के साथ जी रहा है।

अब एक तीसरी तरह का व्यक्तित्व भी होता है जिसका एक उदाहरण मैंने दो-तीन बार पढ़ा है। प्रसिद्ध उद्योगपति कुमार मंगलम बिड़ला की पत्नी नीरजा बिड़ला के बारे में करीब 25 साल पहले एक पत्रिका में पढ़ा था। उन्होंने शादी के बाद का पहला हिस्सा अपने तीन बच्चों को पालने में लगाया। उनके बच्चे भी व्यापारिक घराने से संबंधित होने के बावजूद अपना अलग जीवन जीते हैं। बेटा क्रिकेटर है, जो रणजी खिलाड़ी है और आईपीएल में भी चयनित हो चुका है। एक बेटी गीतकार है और दूसरी बेटी मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। बच्चों के स्थापित होने के बाद नीरजा बिड़ला ने अपना व्यक्तिगत जीवन प्रारंभ किया। वे साइकिल की शौकीन हैं और उन्होंने अपने ग्रुप के साथ केरल और राजस्थान में बिना किसी पूर्व सूचना के गांवों की यात्रा की। उन्होंने लोगों के घरों में रुक कर खाना खाया, उनके जीवन को समझा। इसके अलावा नीरजा बिड़ला एक मोटिवेशनल स्पीकर भी हैं और मानसिक रोगों के क्षेत्र में भी काम कर रही हैं।

मोटे तौर पर देखें तो ये जीवन के तीन तरह के अंदाज हमें अपने चारों तरफ नजर आते हैं। एक तरफ तो काम ही काम, पैसा ही पैसा। दूसरी तरफ निष्क्रिक साहस, भ्रमण और जीवन को जानने की ललक। तीसरा जो है वह मध्य मार्ग है। जीवन की जिम्मेदारियों को पूरा किया जाए, सामाजिक और पारिवारिक पूर्णता प्राप्त की जाए और उसके बाद में जीवन को अपने अनुसार जिया जाए। आमतौर पर देखा गया है कि जो प्रसिद्ध हो, धनी हो, बड़े मकान में रहता हो, लंबी ऊंची कार रखता हो, बच्चे विदेश में शिक्षा प्राप्त कर रहे हों तो लोग कहते हैं कि बंदा बड़ी शानदार जिंदगी जी रहा है पर क्या वास्तव में यह सच है? या फिर सब बार्बी गुड़िया बने फिर रहे हैं। बकौल निदाफ़ाज़ली: –बाहर से गुड़िया हंसे, भीतर पोलमपोल/ गुड़िया से है प्यार तो, टांकों को मत खोल।।

धन, बल और प्रसिद्धि सुविधाएं दे सकते हैं, लेकिन इस बात की कोई गारण्टी नहीं है कि इनसे सुकून भी हासिल हो जाएगा। बड़े-बड़े धनिक, बड़े-बड़े राजा सम्राट, नामी-गिरामी लोग ऐसी जिंदगी जी कर गए हैं जिसमें उन्हें कभी भी पूर्णता का एहसास नहीं मिला। एक समय की प्रसिद्ध हिंदी फिल्म अदाकारा मीना कुमारी उन्होंने अपनी जिंदगी को अपनी एक रचना में सिर्फ चंद शब्दों में समेटा है :"सांस लेने को तो जीना नहीं कहते यारब"।

प्रसिद्ध डॉक्टर साहब थे उनकी जिंदगी उन्हीं के शब्दों में अपूर्ण रही। अब कहने को तो यह काम का जुनून या कर्तव्य का निर्वाह है पर वास्तविकता में धन कुबेर बनने की इच्छा भी मन के किसी कोने में छुपी रहती है। पर हम भूल जाते हैं कि कोई अकेला व्यक्ति चाहे कितने ही मेहनत करे, वह जीवन की सामान्य सुख-सुविधाएं तो अर्जित कर सकता है, धनकुबेर नहीं बन सकता है। ऐसा सोचना ही नादानी है और तकरीबन पूरा जीवन ही बिना जिए समय के गर्भ में समा जाता है। जो दूसरा उदाहरण है वह कई माने में ठीक है पर कुछ अन्य मापदंडों पर खरा नहीं उतरता है। इस तरह का जीवन तभी संभव है जब या तो आप वैराग्य का जीवन जीने का साहस रखते हों या पुश्तैनी तौर पर आपको आर्थिक संपन्नता विरासत में मिली हो वरना जीवन की विकटता और निष्ठुरता आप का इंतजार कर रही होती है।

जो तीसरा उदाहरण है नीरजा बिड़ला का, वह एक संतुलित जीवन है। अपनी जिम्मेदारियां पूर्ण की, अपने जीवन को विकसित किया और उसके बाद में अपनी इच्छाएं पूरी की लेकिन इसके लिए एक विशिष्ट स्थिति का होना आवश्यक है कि आपके लिए धन का उपार्जन कोई और लोग करें। जो अति धनिक लोग हैं वे आबादी का एक बहुत थोड़ा-सा प्रतिशत होते हैं जहां लोग कॉरपोरेशन बना कर काम करते हैं। इन लोगों के लिए हजारों दूसरे लोग काम करते हैं और उनके श्रम के फलस्वरूप ये लोग जिंदगी को दूसरे व्यक्तियों से अलग तरह से जीने की क्षमता रखते हैं। इन लोगों का मुख्य कार्य योजना बनाना, उसके लिए धन की व्यवस्था करना और योजना को सफल बनाना है। धन कुबेर ऐसे ही लोग बन सकते हैं बाकी की मंजिल धनी हो जाने तक सीमित होती है।

वैसे देखा जाए तो दुनिया के हर प्राणी का जीवन को जीने का अपना-अपना अलग अंदाज होता है । मानव जीवन के लिए देखा जाए तो धन-संपत्ति का संग्रहण एक अति प्रमुख आकर्षण होता है पर धन भी आवश्यक है और कार्य करना भी ज़रूरी है मगर किस हद तक और किस कीमत पर?

मनुष्य जीवन का कोई न कोई विशिष्ट उद्देश्य होना चाहिए। उद्देश्य बड़े छोटे हर तरह के होते हैं। जिस समाज की वजह से आपने धन कमाया, नाम कमाया, सुख-सुविधाएं भोगी तो एक समयोपरांत कुछ हिस्सा वापस भी समाजोपयोगी कार्यों में लगाओ। जीवन में यदि आपने अनुभव इकट्ठे किए तो उसकी पूंजी भी उम्र के एक मोड़ पर आकर चारों तरफ बांटो, एक जीवन दर्शन लोगों को भी उपलब्ध करवाओ। आपने क्या जाना, क्या जान कर भी नहीं माना, कहां गलतियां हुई, कहां कुछ और किया जा सकता था – इसी तरह के बहुत सारे आयाम हैं जिनको कि आदमी उम्र के साथ सबके साथ बांट सकता है।

याद रहे सिर्फ नारे लगाने से, जोर-जोर चीखने से देश का निर्माण नहीं होता है। देश या समाज का निर्माण सदा ही छोटी-छोटी बातों से अपने चारों तरफ परिवर्तन लाने पर ही होता है। सबको धन, मान-सम्मान, ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार है और उस की कोशिश भी करनी चाहिए, लेकिन यह सब हमारे आसपास के जीवन को समझने की कीमत पर नहीं होना चाहिए ।

हर सफल और संपन्न व्यक्ति के जीवन में वह मोड़ जरूर आता है जब उसको महसूस होता है कि धन और सफलता के माने अब उसके जीवन में वैसे नहीं रहे जैसे प्रारंभिक अवस्था में थे। बेहतर जिंदगी जीने के लिए हमें उस मोड़ को, उस परिवर्तन को पकड़ना होता है। पर हम उससे आगे निकल जाते हैं और फिर एक ऐसे भटकाव में चले जाते हैं जहां से हम वापस जीवन में लौट नहीं पाते या फिर लौटने के लिए बहुत देर हो चुकी होती है।

डॉ. रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

पानी पिलाने वाली सहायककर्मी को एईएन ने हाथों से पिलाया पानी

राजगढ़, (निसं)। अलवर कस्बे के जेवीवीएनएल सहायक अभियंता कार्यालय में 38 वर्षों तक के विभागीय कर्मचारी अधिकारियों के साथ आमजन को पानी पिलाने वाली सहायक कर्मचारी सरियम को सहायक अभियंता दीपक शर्मा ने अपने हाथों से पानी पिला कर सहायक कर्मचारी की सेवानिवृत्ति को यादगार बना दिया। पिनान निवासी सहायक कर्मचारी सरियम पत्नी सुभान पिछले 38 वर्षों से सहायक अभियंता कार्यालय राजगढ़ में कार्यरत रही। इस दौरान अधिकारी एवं आमजन को पानी पिलाने के कार्य में सेवा भाव को ऊंचाई प्रदान करने में महिला ने कसर नहीं छोडी। इधर 30 नवंबर को उनकी सेवानिवृत्ति पर सेवा भाव से किए गए कार्यों की सभी ने सराहना की वहीं सहायक अभियंता दीपक कुमार ने अपने हाथों से पानी पिला कर गाडी में बिठा सम्मान पूर्वक विदाई दी।

उत्तरप्रदेश से आए मंदबुद्धि युवक को परिजनों से मिलाया

सादुलपुर, (निसं)। उत्तर प्रदेश के शामली जिले से भटक कर आए हुए एक मंदबुद्धि युवक को उसके परिजनों तक पहुंचाकर स्थानीय आरपीएफ कांस्टेबल कर्मपाल चौधरी तथा बेवड गांव के इंजिनियर महेश ने मानवता का परिचय दिया ।

सोनू नाम का मंदबुद्धि युवक दो रोज पूर्व बेवड गांव में पहुंचा। तथा उक्त युवक को गांव में महेश ने देखा। पूछताछ पर वह अपने बारे में पूरा विवरण नहीं दे पाया। इंजीनियर महेश ने उसे घर पर रखा। प्रयास करने पर पता लगा कि युवक शामली जिले के गागोर गांव निवासी है तथा अपने पिता का नाम शौकीन बताने के अलावा कुछ और नहीं बता पाया । जानकारी मिलने के बाद महेश ने सादुलपुर रेलवे पुलिस बल के सिपाही कर्मपाल चौधरी को इस बारे में जानकारी दी । कर्मपाल इससे पहले भी उत्तर प्रदेश के कई लापता व्यक्तियों को उनके परिजनों तक पहुंचा चुका है।

तीन माह पूर्व घर से लापता मंदबुद्धि युवक की पहचान कर उसके परिजनों को सुर्पूद किया।

कर्मपाल ने दिन रात एक कर शामली आरपीएफ को इत्तला पहुंचाई। इसके बारे में पूरी जानकारी मिल सकी। मंगलवार को सोनू के पिता शौकीन तथा भाई मोहन बेवड पहुंच गए, जहां पर तस्दीक तसल्ली करने के बाद युवक को परिजनों के सुपुर्द कर दिया। परिजनों ने बताया कि सोनू तीन माह से लापता चल रहा था। उसकी खोज करने के बाद भी इसका पता नहीं लग पाया। इस बारे में पुलिस रिपोर्ट भी की हुई है।

स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 : नवलगढ़ जिले में टॉप

झुंझुनूं/नवलगढ़, (निसं)। स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 में जिले में प्रथम तथा प्रदेश में 14 वें स्थान पर नवलगढ नगरपालिका रही है। इस सर्वे में देश के करीब चार हजार से ज्यादा शहरों को शामिल किया गया है। नवलगढ़ नगर पालिका स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 अभियान के तहत भारत सरकार द्वारा जारी किए गए परिणाम में नगर पालिका नवलगढ प्रशासन के अथक प्रयासों से जोन रैंकिंग में झुंझुनूं जिले में प्रथम व राजस्थान में 14वें स्थान पर रही है। वहीं पूरे भारत में 119वें स्थान पर रही।

इधर, परिणाम जारी होने के बाद पालिकाध्यक्ष शोयब खत्री ने प्रसन्नता जताते हुए पूरी नगर पालिका टीम के साथ-साथ सफाई कर्मचारियों को इस महत्वपूर्ण योजना में महत्वपूर्ण रोल अदा करने पर आभार जताया। वहीं ईओ राकेशकुमार रंगा ने सफाई निरीक्षक ललित शर्मा सहित सभी सफाई कर्मचारियों को इस मुकाम के लिए धन्यवाद दिया।

बैलगाड़ी से पहुंची बरात, देखने वालों की भीड़ लगी

परंपरा को जीवित रखने और पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया

भीलवाड़ा, (निसं)। आधुनिक दौर में जहां दूल्हा पक्ष के लोग लग्जरी गाडियों से दुल्हन के दरवाजे पर बारात लेकर पहुंचते हैं वहीं मंगलवार को दूल्हा व गुर्जर बारातियों को बैलगाडी में बैठाकर दुल्हन के घर जा पहुंचा। इस दृश्य को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। इस दौरान लोग अपने मोबाइल में सेल्फी लेते नजर आए

बता दे कि दूल्हा अपनी पुरानी परंपरा को जीवित रखने और पर्यावरण को बचाने के लिए बैलगाडी से बारात लेकर दुल्हन के घर तक पहुंचा । यह बारात आसींद के झामरा का बाडीया निवासी एकलिंग गुर्जर पुत्र तेजमल गुर्जर ने डोली और बैलगाड़ी को आकर्षक ढंग से सजाकर ब्याह रचाने निकले थे जो 4 किलोमीटर दूरी स्थित कटार गांव की मीना देवी गुर्जर पिता तेजू गुर्जर के घर पहुंची । जहां विधि विधान से तेजू राम गुर्जर की पुत्री मीणा का विवाह संपन्न हुआ।

■ **लोग अपने मोबाइल में सेल्फी लेते नजर आए**

वर्तमान समय में अगर कोई यह कहे कि किसी की बारात बैलगाड़ी में जाएगी तो लोगों को विश्वास नहीं होगा कई वर्षों बाद पुरानी परंपरा से निकली बारात आज चर्चा का विषय बन गई है । बारात जिस गांव और चौराहे से निकली वहां लोग बरात को देखने के लिए अपने अपने घरों से बाहर निकल गए। बैल गाडियों को खींच रहे सभी बैलों के गले में घंटी बंदी थी जो शुभ बेला की घड़ी की याद दिला रही थी। दूल्हा एकलिंग गुर्जर ने बताया कि प्रदूषण से जनजीवन पर पड़ रहे प्रभाव को लेकर लोग जागरूक हो इसलिए मैंने पुरानी परंपरा को जीवित करने की पहल की है।

बैलगाड़ी में जाती बारात।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 1 दिसम्बर, 2021

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2078, चित्रा नक्षत्र सायं 6:47 तक, सौभाग्य योग रात्रि 8:44 तक, कौलव करण दिन 12:55 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 7:45 पर तुला राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–तुला, बुध–वृश्चिक, गुरू-कुम्भ, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

आज राजयोग सायं 6:47 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:34 तक, शुभ 10:17 से 12:16 तक, चर 2:52 से 4:11 तक, लाभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 5:29

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बढ़ेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
धार्मिक-मांगलिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ कार्य पर धन खर्च हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

धनु
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।